Date 13/7/20

Indian Philosophy

PAGE NO. :
DATE / /20

से ही विषयोन्मुख होती है, बाह्य विषयों की ओर प्रवृत्त होना उनका स्वभाव है। उनकी बहिर्मुखवृत्ति को अन्तर्मुख बनाना, उन्हें बाह्य विषयों से हटाकर और मन के वश मे रखना प्रत्याहार कहलाता है।

उपर्युक्त पाँच अंग योग के बहिरंग साधक हैं, निम्नलिखित तीन योग के अन्तरंग साधन माने गये है।

अन्तरंग

i) **धारणा** — किसी देश मे जैसे नासाग्र, भ्रूमध्य मे, हृत्कमल मे या किसी बाह्य वस्तु मे जैसे इष्टदेवता की ~~मूर्ति~~ मूर्ति आदि मे चित्त को लगाना ~~धारणा~~ धारणा है।

ii) **ध्यान** — ध्येय वस्तु विषयक चित्त वृत्तिया जब निरंतर एकाकार रूप से प्रवाहित हो तब इसे ध्यान कहते हैं, ध्येय वस्तु के साथ की एकतानता का नाम ध्यान है

iii) **समाधि** — समाधि का अर्थ है ~~ध्येय~~ ध्येय वस्तु मे चित्त की विक्षेप रहित एकाग्रता। समाधि मे ध्यान ~~है~~ ध्येय वस्तु का आकार ग्रहण कर लेता है, ध्यान और ध्येय की एकता होने पर ध्याता भी ध्येयाकार हो जाता है, समाधि मे ध्याता ध्यान ध्येय की ~~वृत्ति~~ त्रिपुटी मे ध्येय विशेष रह जाता है तथा ध्याता एवं ध्यान ~~एवं~~ ध्येयाकार हो जाता है, ~~अतः चित्त~~

अतः चित्त वृत्ति निरोध एवं स्वरूपावस्थान कैवल्य या मोक्ष है यही योग का चरम लक्ष्य है।

Teacher's Signature________

मानते हैं, अतः वे आत्मा को भी नहीं मानते इसलिए इसे अनात्मवाद भी कहते हैं।

आत्मा शब्द भारतीय दर्शन में तीन विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। —

1) व्यवहारिक प्रमाता के अर्थ में — जो अहंकार ममकार का सीमित व्यक्तिनिष्ठ केन्द्र है जो स्व संवेदन का विषय है, जो अज्ञान से आवृत्त है, जिसे सीमित ज्ञाता, कर्ता भोक्ता माना गया है और जिसे व्यवहारिक जीवात्मा की संज्ञा भी दे दी जाती है,

2) तात्विक जीवात्मा के अर्थ में — जो स्वार्थयुक्त अहंकार ममकार का केन्द्र है, जो अपने परिवर्तनशील पर्यायों में अपनी परिणामरहित एकता बनाए रखता है, और जिसे नित्य चेतन द्रव्य के रूप में स्वीकार किया जाता है, तथा जिसे संख्या में अनेक माना जाता है।

3.) विशुद्ध साक्षी या द्रष्टा के अर्थ में — जो शुद्ध चैतन्य तथा अखंड आनंदरूप परमात्म तत्व है जो समस्त व्यवहारिक ज्ञान और अनुभव का एकमात्र अधिष्ठान होने के कारण स्वतः सिद्ध एवं शुद्ध निरपेक्ष चैतन्य होने के कारण स्वप्रकाश है। उपनिषद के ऋषियों ने और अद्वैत वेदान्तियों ने आत्मा को शुद्ध चैतन्य रूप माना है।

बुद्ध ने आत्मा शब्द का प्रयोग इस व्यवहारिक 'प्रमाता' तात्विक जीवात्मा के लिए किया है

सांख्य का गुण

गुण शब्द का साधारण अर्थ विशेषण है, परन्तु इसका विशेष अर्थ कोई या धागा है जिनको मिलाकर प्रकृति रूपी रस्सी मिलती है जिसे पुरुष रूपी पशु संसार में बांधता है।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणात्मिका है, ये तीन गुण है सत्व, रजस और तमस ये तीनों प्रकृति के उपादान तत्व है, ये गुण पुरुष और अतीन्द्रिय है इसलिए प्रकृति के समान ही इनका भी प्रत्यक्ष नहीं होता तथा इनके कार्यों से इनका अनुमान किया जाता है। सत्व गुण का कार्य सुख है, रज गुण का कार्य दुःख है, तथा तमो गुण का कार्य मोह है। ये प्रकृति रूपी द्रव्य के गुण या धर्म नहीं है अतः प्रकृति तथा गुणों में द्रव्य गुण संबंध नहीं है ये गुण स्वयं द्रव्य रूप है। ये वे तत्व है जिनसे प्रकृति बनती है, ये प्रकृति के संघटक तत्व है। गुण या धर्म द्रव्य के ही होते है, धर्म के अर्थ में गुण के गुण नहीं होते। किन्तु सांख्य के त्रिगुणों के भी गुण बताये गये है, प्रकाशत्व, लघुत्व, ~~चलत्व~~ चलतत्व, गुरुत्व आदि इन गुणों के गुण है। अतः स्पष्ट है कि ये गुण द्रव्य रूप है ये प्रकृति के निर्माणक तत्व है। अपने सम्मिलित साम्य रूप में ये तीनों गुण ही प्रकृति है। प्रकृति इनके अतिरिक्त कुछ नहीं है इनको गुण इसलिए कहा गया है क्योंकि ये प्रकृति के अपेक्षा गौण है।

गुणों का स्वरूप — सांख्य दर्शन के अनुसार सत्व, रज और तम तीन गुण है। इन गुणों का स्वभाव भिन्न है। ये तीनों गुण सर्वदा मिलकर ही कार्य करते हैं, परन्तु इनके स्वभाव में भेद है।

Teacher's Signature

(1) सत्व गुण — सत्व गुण शुद्धता या स्वच्छता का प्रतीक यह प्रकाशक और लघु है। इन्द्रियों सन्निकर्ष होने पर सत्व से पदार्थ का प्रकाश या ज्ञान होता है, लघु होने से यह ऊर्ध्वगामी है, सत्व से सुख उत्पन्न होता है। सुख के अन्तर्गत सन्तुष्टि, प्रीति, श्रद्धा, संतोष विवेक, दया आदि सुखद भाव आ जाते हैं, यह शुक्लवर्ण है।

(2) रज गुण — रज गुण यह उत्तेजक है चंचल है रज गुण अशुद्धी का प्रतीक है। यह सक्रिय या चल उपष्टम्भक या संश्लेषणात्मक होता है, समस्त क्रिया या ~~प्रवृत्ति~~ प्रवृत्ति उसी के कारण होती है। उदाहरणार्थ सत्व गुण का स्वरूप प्रकाश है और तम गुण का स्वरूप अन्धकार है परन्तु ये प्रकाश और अन्धकार उत्पन्न करने की शक्ति रजो गुण ही प्रदान करता है, जिस प्रकार एक बहता हुआ जल का प्रवाह स्वयं तो बहता ही है, अपने साथ-साथ तृण आदि को भी प्रवाहित करता है उसी प्रकार रजो गुण स्वयं क्रियाशील होकर अन्य गुणों को भी क्रियाशील बनाता है यह रक्त वर्ण है। यह दुःख उत्पन्न करता है। दुःख के अन्तर्गत भाव द्वेष, मूर्च्छा, क्रोध, मत्सर आदि दुखद भाव आ जाते हैं।

(3) तमो गुण — तमो गुण अंधकार या अज्ञान का प्रतिक है इसका कार्य प्रकाश तथा क्रिया को, सुख तथा दुःख का अवरोध करना है यह गुरु या वर्णक या सुप्तावस्था या अवरोधक है भारी होने से यह अधोगामी है। इससे मोह उत्पन्न होती है मोह के अन्तर्गत प्रमाद,